क़व्वाली जाइज़ है

(सिमाअ़ बिल मज़ामीर)

मुअ़ल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

क़व्वाली जाइज़ है

मुअ़ल्लिफ़

डॉ०-आज़म बेग क़ादरी

09897626182

नाम किताब- **क़व्वाली जाइज़ है**

मुअ़ल्लिफ़- **डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी**

सने इशाअ़त- जनवरी-**2020**

कम्पोज़िंग- **जुनैद अ़ली सफ़वी & ज़ैनुल आ़बदीन सफ़वी**

नाशिर- **सय्यद ज़हीरउद्दीन साहब**

क़ीमत- **30/-** रूपये

-: मिलने के पते :-

मदार बुक डिपो मकनपुर (कानपुर) 09695661767	**जावेद बुक सेलर** करहल (मैनपुरी) 09634447000
अनवार उर्दू बुक डिपो बिसात खाना मैनपुरी 09319086703	**उर्दू बुक हाउस** तलाक महल (कानपुर) 09389837386,09559032415

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

न०शुमार सफ़हा

786/92

अल्ह़म्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तईनुहू व नस्तग़फ़िरुहु वनुअ़मिनू बिही व नतावक्कलू अ़लैहि व नाऊजू बिल्लाहि मिन शुरुरि अ़न फुसिना वमिन सइयेआति आअ़मलिना मंई युदलिलहु फ़ला हादियालहू वनशहदु अन्ना मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू ०

तमाम खूबियाँ और तारीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला के लिये हैं जो तमाम कायनात का एक अकेला मालिक व ख़ालिक़ है जिसने अपनी रह़मत व मेहरबानी की चादर से अपने बन्दों को ढाँप रखा है जिसने कायनात की तख़लीक़ व तरतीब को हुस्नो जमाल बख़्शा जो दिलो के पोशीदा राज़ो पर मुत्तलाअ़ है जो तमाम ह़िकमतों व ग़ैबों का जानने वाला है कायनात का कोई ऐसा ज़र्रा नहीं जो उसकी ह़म्दो सना न करता हो हर शैः उसके ताबेअ़ व क़ब्ज़े कुदरत में है जो अपनी बढ़ाई और बुलन्दी में यकता है

उसका कोई शरीक नहीं जो नेअ़मतें व रिज़्क़ अ़ता करने वाला, हिदायत देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान व करीम है और दुरूदो सलाम हो रहमते दो अ़ालम सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम पर जो ज़ाहिर व बातिन में तइयब व ताहिर हैं जो तमाम ऐ़बो नक़ाइस से पाक उ़लूमे ग़ैब के जानने वाले हैं जिन्हें अल्लाह तअ़ाला ने नूर व हिदायत के साथ मबऊ़स फ़रमाया जिनके नूर से दो अ़ालम में उजाला है अल्लाह तअ़ाला ने जिन्हें कौसर अ़ता की जिस पर रोज़े क़्यामत प्यासे मोमिन आयेंगे और सैराब होकर जायेंगे जिन्होंने इन्सान को गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर राहे हिदायत और राहे निजात दिखाई अल्लाह तअ़ाला ने अपने हबीब को

औसाफ़ व अख़लाक़ में बुलन्द और बे मिस्ल और तमाम अम्बिया–किराम अलैहिमुस्सलाम का सरदार बनाया और अपने नूर से हुजूरे पाक के जिस्मे अत्हर को तख़लीक़ किया जिनका ज़ाहिर व बातिन सब नूर है।

और रहमत व सलामती हो आपके अहले बैत अत्हार पर जो दीन की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये कुरबान हो गये जो रोज़े क़यामत मुहिब्बाने अहले बैत की निजात का ज़रिया होंगे और हर आफ़त व मसाइब के दरमियान ढ़ाल होंगे और रहमत व सलामती हो आपकी अज़वाजे मुतह्हरात और आपकी आल व असहाव और तमाम औलिया–ए–किराम व सूफ़िया–ए–इज़ाम पर और उन पर जो अल्लाह तआला के मुक़र्रब व मख़सूस बन्दे हैं।

–: तम्हीद :–

अल्लाह तआ़ाला व उसके प्यारे रसूल सरकारे दो आ़लम(सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने तमाम मुसलमानों के लिये अहकामे शरीअ़त को वज़ाहत के साथ जाइज़ व नाजाइज़ और हराम के दरमियान वाज़ेह फ़र्क़ फ़रमाया सिमाअ़ बिल मज़ामीर के मसले पर कुछ जाहिल कम अ़क्ल और लाइल्म लोग सिमाअ़ बिल मज़ामीर को हराम कहते हैं जबकि उनके पास कोई दलील मौजूद नहीं है बाज़ ग़ैर कामिलीन फुक़हा किसी मसले की तहक़ीक़ किये बग़ैर और उसके हक़ीक़ते हाल को और फ़िक़ा के बुनियादी उसूल को समझे बग़ैर अपनी जाहलियत का सबूत देते हुये जाइज़ व मुबाह चीज़ को हराम कहते हैं ऐसे फुक़हा माल व दुनियाँ की मुहब्बत में मुब्तिला हैं और उनके अन्दर जाइज़ व नाजाइज़ को समझने की न सलाहियत है और न तमीज़ और न ही इल्म है बल्कि जो उनके दिल में आता है उसे फ़तवे का नाम दे देते हैं और अपनी घटिया सोच की वजह से जाइज़ काम को बातिल और हराम ठहराते हैं लेकिन अगर उनके दलाइल व मसाइल को तहक़ीक़न देखा जाये तो उनके फ़तबे बे बुनियादी और बातिल और हक़ के बरअक्स होते हैं।

फ़ित्ने और फ़िरक़ो के इस दौर में चन्द फ़िरक़ा परस्त मौलवियों ने अपनी कम इल्मी और बद–अ़क़ीदगी और बे हिकमती के सबब मुसलमानों के दरमियान जाइज़ व मुबाह कामों के मुतअ़ल्लिक़ इन्तिशार व इख़्तिलाफ़ पैदा कर रखा है जो मुसलमानों के दरमियान तफ़रीक़ का बाइस है मसलन, ईद मीलादुन्नबी मनाना, ताज़ियादारी करना, फ़ातिहा दिलाना, मज़ारात पर ख़वातीन की जाने की मुमानियत और क़व्वाली का सुनना बगैराह और इनके

नज़दीक मज़कूरा उमूर गुनाह कबीरा और हराम हैं और ऐसे मुल्ला खुद को सुन्नत वल जमाअ़त कहते हैं हालाँकि हक़ीक़त ये है कि ऐसे मुल्ला 72 फ़िरक़ों के ज़ुमरे में शामिल हैं और इन लोगों की ख़ास तवज्जै और तरजीह इन कामों को रोकने पर सबसे ज्यादा रहती है और कसरत के साथ मुसलमानों को इससे रोकते हैं इनकी नज़र में दीन इस्लाम में मज़कूरा कामों से ज़्यादा दूसरा कोई फ़ेअ़ल इतना ज़्यादा बुरा और गुनाह नहीं है हालाँकि हलाल चीज़ को जो हराम कहे उस पर कुफ़्र की हद लग जाती है और मज़कूरा उमूर पर इन मौलवियों के पास कुरान व अहादीस की कोई दलील भी मौजूद नहीं फिर भी ये उन्हें नाजाइज़ व हराम कहते हैं।

अल्लाह तआ़ला कुरान मजीद में इरशाद फ़रमाता है-
और वो झूठ मत कहा करो जो तुम्हारी ज़ुबाने बयान करती रहती हैं कि ये हलाल है और ये हराम है इस तरह कि तुम अल्लाह पर झूठा बोहतान बाँधो बेशक जो लोग अल्लाह पर झूठा बोहतान बाँधते हैं वो कभी फ़लाह नही पायेंगे फ़ायदा थोड़ा है मगर उनके लिये बड़ा दर्दनाक अ़ज़ाब है। (सू०-नहल- 116,117)

इरशादे बारी तआ़ला है-
हालांकि उसने तुम्हारे लिये उन (तमाम) चीज़ों को तफ़्सीलन बयान कर दिया है जो उसने तुम पर हराम की हैं बेशक बहुत से लोग बग़ैर (पुख़्ता) इ़ल्म के अपनी ख्वाहिशात (और मन घड़त तसव्वुरात) के ज़रिये (लोगों को) बहकाते रहते हैं और यक़ीनन आपका रब हद से बढ़ने वालों को खूब जानता है। (सू०-अनआ़म-119)

अल्लाह तआ़ला कुरान मजीद में इरशाद फ़रमाता है-
ऐ ईमान वालो जो पाकीज़ा चीज़ें अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल की हैं उन्हें अपने ऊपर हराम मत ठहराओ और न ही हद से आगे बड़ो बेशक अल्लाह हद से आगे बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता। (सू०-मायदा-87)

इरशादे बारी तआ़ाला है–
ऐ महबूब (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) आप फरमां दें कि किसने अल्लाह तआ़ाला कि उस ज़ीनत (व आराइश) को हराम क़रार दिया है जिसे अल्लाह तआ़ाला ने अपने बन्दों के लिए पैदा फ़रमाया और किसने पाकीज़ा रिज़्क़ को हराम क़रार दिया ये (सब नेअ़मतें जो) अहले ईमान की दुनियाँ की जिदंगी में (बिल उमूम र'वा) हैं इस तरह हम जानने वालों के लिये आयतें तफ़्सील से बयान करते हैं ऐ महबूब (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) आप फ़रमां दें कि मेरे रब ने तो सिर्फ़ बे हयाई की बातों को हराम किया है जो उनमें से ज़ाहिर हों और जो पोशीदा हों (सब को) और गुनाह को और नाहक़ ज़्यादती को और उस बात को कि तुम अल्लाह का शरीक ठहराओ जिसकी उसने कोई सनद नहीं उतारी और (मज़ीद) ये कि तुम अल्लाह तआ़ाला (की ज़ात) पर ऐसी बातें कहो जो तुम खुद भी नहीं जानते। (सू०–आअ़राफ़–32,33)

इरशादे खुदा वन्दी है –
ऐ नबी (मुकर्रम) आप खुद को उस चीज़ (यानी शहद के नोश करने) से खुद को क्यों मना करते हैं जिसे अल्लाह तआ़ाला ने आप के लिये हलाल फ़रमां दिया है। (सू०–तहरीम–1)

इरशादे बारी तआ़ाला है–
तुम उन बातों में क्यों झगड़ते हो और तकरार करते हो जिनका तुम्हें (सिरे से) कोई इल्म ही नहीं और अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते। (सू०–आले इमरान–66)

अल्लाह तआ़ाला का एहसान और शुक्र है इन मज़कूरा जाइज़ व मुबाह उमूर पर अल्लाह तआ़ाला ने अपने महबूब (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के सद्क़े व तुफ़ैल मुझे ये तौफ़ीक़ बख़्शी कि मैं इन मौलवियों का मज़कूरा उमूर के

नाजाइज़ होने का कुरान व अहादीस की रोशनी में रद्द करता हूँ और कुछ मौज़ूआत पर मेरी तसनीफ़ात बशक्ले किताबें मन्ज़रे आम पर हैं जैसे ''मीलाद मनाना ऐ़न ईमान है'' ''अ़ज़मते ताज़ियादारी'' और ''वसीला वाजिब है'' बग़ैराह और अब में सिमाअ़ बिल मज़ामीर के जाइज़ होने पर कुछ अहम गुफ़्तगू अपनी इस किताब ''क़व्वाली जाइज़ है'' में कुरान व अहादीस के दलाइल के साथ रक़म कर रहा हूँ अल्लाह तआ़ला अपने मेहबूब सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के सद्क़े व तुफ़ैल हमें हक़ सुनने, व हक़ समझने, व हक़ बोलने और हक़ बात लिखने की तौफीक़ मरहम्त फ़रमायें और तमाम बुराईयों और शैतान के शर से महफ़ूज़ रखे। आमीन..............

फ़क़ीर

डा० आज़म बेग क़ादरी

-: सिमाअ़ कुरान की रोशनी में :-

मज़ामीर के साथ सिमाअ़ हराम नहीं है बल्कि लह्व व लअ़ब के लिये हो या लग़वियात पर मुश्तमिल हो तो हराम है और मज़ामीर का सुनना कभी हलाल होता है और कभी हराम क्योंकि उसके सुनने में नियतें मुख़्तलिफ़ होती हैं और तमाम उमूर का हुक्म उनके मक़सद व नियत पर मौक़ूफ़ होता है अगर इरादा और नियत अच्छे मक़सद के लिये हो तो जाइज़ है और बद नियती और बुरे क़सद या दुन्यावी या नफ़्सानी ख़्वाहिशात के सबब हो तो सिमाअ़ हराम है यानी हक़ पर मबनी सिमाअ़ जाइज़ है और बातिल पर मबनी सिमाअ़ हराम है।

कुरान मजीद में अल्लाह तअ़ाला इरशाद फ़रमाता है- जो लोग बात को ग़ौर से सुनते हैं फिर उसके बेहतर पहलू की इत्तिबाअ़ करते हैं यही वो लोग हैं जिन्हें अल्लाह तअ़ाला ने हिदायत फ़रमाई है और यही लोग अक़्लमन्द हैं। (सू०-जुमर-18)

तफ़्सीर- ये आयते करीमा हज़रत ज़ैद, हज़रत अबू ज़र और हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुम) के बारे में नाज़िल हुई है मगर सही बात ये है कि जिस तरह इन बुजुर्गों पर मुश्तमिल है ठीक इसी तरह हर शख़्स को शामिल करती है जिसमें ये औसाफ़ हों यानी बुतों से बेज़ारी और अल्लाह तअ़ाला की फरमां बरदारी जिनके लिये दोनों जहान में खुशियां हैं बात को सुनकर और समझकर उनमें से जो अच्छी हो तो उस पर अ़मल करने वाले मुबारकबाद के मुस्तहिक़ हैं।
(तफ़्सीर इब्ने कसीर-23/86)

तफ़्सीर– हज़रत अ़ता ने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत नक़ल की है कि जब अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ईमान ले आये तो हज़रत उस्मान, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़, हज़रत तल्हा, हज़रत जुबैर और हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास और हज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) इनके पास हाज़िर हुये और आपके ईमान लाने के बारे में इनसे दरयाफ्त किया पस आपने उन्हें ईमान लाने की ख़बर दी तो वो सब भी ईमान ले आये चुनांचा इन तमाम के हक़ में ये आयत नाज़िल हुई। (तफ़्सीर मज़हरी–8/253)

तफ़्सीर– हजरत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं इसका मिस्दाक़ वो लोग हैं जो अच्छी और बुरी बातें सुनते हैं फिर अच्छी बात का ज़िक्र करते हैं और अच्छी चीज़ पर अ़मल करते हैं और बुरी चीज़ से रुक जाते हैं एक क़ौल ये किया गया है कि कुरान और ग़ैर कुरान की इत्तेबाअ़ तो उनमें से अहसन यानी मुहकम की इत्तेबाअ़ करते और उस पर अ़मल करते है।

हासिल कलाम–मज़कूरा कुरान मजीद की आयात व तफ़्सीर की रोशनी में ये नतीजा हासिल हुआ कि यस्तमेऊनल क़ौल से मुराद कुरान और दूसरा कलाम है। यानी दूसरा कलाम जिसमें अच्छी व नेक बातें हों, नेकी की दावत हों, इस्लाहे नफ़्स की बाते हों या नेक आअ़माल की तरफ़ राग़िब करने वाली बातें हों या अल्लाह व रसूल की तरफ़ रूजुअ़ और माइल करने वाला कलाम हो या वो कलाम जो अल्लाह व रसूल और सहाबा व नेक सालिहीन बुज़ुर्गों और अल्लाह के मेहबूब व मक़बूल बन्दों का तज़किरा हो या वो कलाम जो ईमान में ताज़गी और तजदीद का बाइस हो या वो कलाम जिसके ज़रिये इन्सान की रूह अनवारे इलाहृया से मुतास्सिर हो या वो कलाम जो क़ल्ब में अल्लाह व रसूल की इन्तिहाई

मुहब्बत पैदा करे या वो कलाम जो नेकी की तरफ़ राग़िब करे और बुराई व गुनाहों से दूर करने वाला हो या वो कलाम जो अहले ईमान का अ़क़ीदा मज़बूत करे और उसमें निखार पैदा करे या वो कलाम जिससे मुसलमानों के दिलों में औलिया–किराम व सूफ़िया–इज़ाम और अहले बैत अतहार की सच्ची मुहब्बत व अ़क़ीदत को इज़ाफ़त हासिल हो अलग़रज हर वो बात या कलाम का कहना व सुनना जाइज़ व मुबाह है जो ख़िलाफ़े शरअ़ और लग़वियात और ममनूअ़ बातों पर मुश्तमिल न हो और वो गुनाह व बुराई की तरफ ले जाने वाला न हो तो वो जाइज़ है तो वाज़ेअ़ हुआ कि क़व्वाली जाइज़ और मुबाह है अगर मज़कूरा अच्छी बातों पर मुशतमिल हों अब रहा सवाल मज़ामीर का तो आगे हम इसका भी खुलासा करेंगे कि कौन से मज़ामीर शरीअ़त में हराम हैं और कौन से जाइज़ और मुबाह हैं।

-: सिमाअ़ अहादीस की रोशनी में :-

इमाम ग़ज़ाली (रहमतुल्लाह अ़लैह) फ़रमाते हैं कि इन्सान का दिल पोशीदा बातों का ख़ज़ाना है और दिलों की तरफ़ जो रास्ता जाता है वो कानों की दहलीज़ से होकर जाता है तो वो नग़मात जो बेहतर और शरई हुदूद के अन्दर हों तो वो दिल और रूह को सुरूर, लज़्ज़त और मुतास्सिर करने वाले हाते हैं वो कानों के रास्ते दिलों और रूह तक पहुँचते हैं और दिलों के राज़ों को बाहर निकालते हैं तो जब दिल को छेड़ा जाता है तो जो कुछ उसमें हैं वो बाहर आता है और दिल में हरकत पैदा होती है और जो कुछ दिल में होता है वो ज़ाहिर हो जाता है ये सिमाअ़ दिल व रूह में एक अ़जीब कैफ़ियत पैदा कर देता है जिसे वज्द कहते हैं और वज्द के सबब आज़ा में हरकत पैदा होती है।

हज़रत जुनैद बग़दादी, हज़रत सर्री सकती, और हज़रत जुन्नून मिश्री (रहमतुल्लाह अ़लैहुम) सिमाअ़ सुनते थे जबकि ये हज़रात लह्व व लअ़ब से परहेज़ और एतराज़ करते थे इमाम अबुल हसन अस्क़लानी जो औलिया-किराम में से थे वो भी क़व्वाली सुनते थे यहाँ तक कि वज्द में आकर बेहोश हो जाते थे उन्होंने इस हवाले से एक किताब भी लिखी जिसमें मुन्किरीने सिमाअ़ का रद्द किया है।

किसी शख़्स के सिमाअ़ को हराम कहने से सिमाअ़ हराम नहीं हो जाता और ये बात अक़्ल से मालूम नहीं होती बल्कि इसके लिये शरई दलाइल की हाजत होती है और शरई मसाइल या तो कुरान से मालूम होते है या (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) के अक़वाल या अफ़अ़ाल से या फिर क़ियास से और जब कोई अम्र या फ़ेअ़ल कुरान व अहादीस और क़ियास से भी नाजाइज़ या हराम साबित न हो तो उसके हराम होने का क़ौल बातिल हो जायेगा और

वो अम्र बाक़ी कामों की तरह मुबाह होगा यानी उसके करने में कोई हर्ज न होगा और सिमाअ़ का हराम होना न कुरान से साबित है और न हदीस से साबित है और न क़ियास से और न ही इस पर इज्माअ़ है तो वाज़ेअ़ हुआ कि सिमाअ़ जाइज़ व मुबाह है और अशआ़र पढ़ने का इन्कार कैसे किया जा सकता है कि जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के सामने अशआ़र पढ़े गये और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने समाअ़त फ़रमाये और बाज़ औक़ात आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने अशआ़र पढ़ने का हुक्म दिया।

हदीस– हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) मस्जिदे नबवी में हज़रत हस्सान बिन साबित (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के लिये मिम्बर बिछवाते जिस पर वो खड़े होकर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की तरफ़ फ़ख़्र करते यानी हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की शानों अ़ज़मत में अशआ़र पढ़ते और दुश्मनाने इस्लाम को जवाब देते और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) फ़रमाते अल्लाह तआ़ला जिबरईल अ़लैहिस्सलाम के ज़रिये हज़रत हस्सान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की मदद फ़रमाता है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/521-2846) (अबू दाऊद–सुनन–6/762-5015)

हज़रत हस्सान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को ये अ़ज़ीम शरफ़ हासिल था कि वो एक आ़ला मक़सद के लिये हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने उन्हें अपना मिम्बर पेश किया और ताईदे जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) और अल्लाह तबारक व तआ़ला की मदद की खुशखबरी सुनाई।

हदीस– अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ऊ़मराह के लिये मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुये

और अ़ब्दुल्लाह बिन र‘वाहा आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के आगे थे और ये अशआ़र पढ़ रहे थे ‘‘ऐ औलादे कुफ़्फ़ार रास्ता छोड़ दो आज हम तुम्हें कुरान के हुक्म के मुताबिक़ ऐसी मार मारेंगे जो कि तुम्हारे दिमाग़ को अपनी जगह से हिलादे और दूर कर देगी और दोस्त को दोस्त से जुदा कर देगी’’ तो हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने कहा ऐ अबू र‘वाहा हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की मौजूदगी और हरम शरीफ़ में अशआ़र पढ़ते हो तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ उ़मर इन्हें छोड़ दो ये अशआ़र इन कुफ़्फ़ारों पर तीरों से ज़्यादा असर अन्दाज़ होते हैं।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/252-ह०–2847)

हदीस– हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि उनसे अ़र्ज़ किया गया कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने कभी कोई शेअ़र पढ़ा है तो उन्होंने फ़रमाया हाँ आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) कभी–कभी इब्ने र‘वाहा का ये शेअ़र पढ़ते थे ‘‘ज़माना तेरे पास ऐसी–ऐसी ख़बरे लायेगा जिनकी तेरे नज़दीक कोई क़ीमत न होगी। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/532-2847)

हदीस– हज़रत अस्वद बिन क़ैस से रिवायत है कि मैने हज़रत जुन्दब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को ये कहते हुये सुना कि एक मर्तबा नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) चल रहे थे कि अचानक आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) को किसी चीज़ से ठोकर लगी और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की उँगली मुबारक से खून बहने लगा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने ये शेअ़र पढ़ा–

‘‘तू तो उँगली है और क्या है जो ज़ख़्मी हो गयी
क्या हुआ अगर राहे मौला में तू ज़ख़्मी हो गई’’।
(बुख़ारी–सही–65/649-ह०–6146)

हदीस– हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) फ़रमाते हैं हज़रत लबीद का ये शेअ़र निहायत उ़म्दाह है कि ''आगाह रहो अल्लाह के सिवा हर चीज़ बातिल है''
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/523-ह०–2849)
(बुख़ारी–सही–5/649-ह०–6147)
(मुस्लिम–सही–5/395-ह०–5888)

हदीस– हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं मैं सौ बार से ज़्यादा हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की ख़िदमत में बैठा सहाबा–किराम शेअ़र पढ़ते थे और दौरे जाहलियत की बातों का तज़किरा करते थे और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) खामोश सुनते और बाज़ औक़ात तबस्सुम फ़रमाते थे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/523-ह०–2850)

हदीस– हज़रत सलमा बिन अक्वाअ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हम नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के हमराह ख़ैबर की तरफ़ निकले तो हम रात भर चलते रहे एक शख़्स ने हज़रत आमिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से कहा कि ऐ आमिर तुम हमें अपने शेअ़र क्यों नहीं सुनाते हज़रत आमिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) शायर थे तो वो अपनी सवारी से उतर कर हुदी ख़्वानी करते हुये ये अशआ़र सुनाने लगे

''गर न होती तेरी रहमत ऐ शाह आ़ली सिफ़ात
तो नमाज़े हम न पढ़ते और न देते ज़कात
बख़्श दे हम को लड़ाई में अ़ता कर सबात
अपनी रहमत हम पे नाज़िल कर शहे बाला सिफ़ात
जब वो नाहक़ चीख़ते सुनते नहीं हम उनकी बात
चीख चिल्लाकर उन्होंने हम से चाही है निजात''

ये सुनकर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने पूछा कि ये हुदी ख़्वां कौन है तो लोगों ने अ़र्ज़ किया कि ये हज़रत आमिर बिन अक्वाअ़ हैं फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ाला आमिर पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाये।
(बुख़ारी–सही–4/310-ह०–4196)
(मुस्लिम–सही–5/89-ह०–4668)

हदीस– हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के ज़माने मुबारक में जब हुदी पढ़ी जाती थी तो आपके गुलाम औरतों के लिये हुदी पढ़ते थे और हज़रत बरा बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) मर्दों के लिये हुदी पढ़ते थे।
(बुख़ारी–सही–2/89 -किताबुल अ़दब)

नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के ज़माना मुबारक में ऊँटों के पीछे हुदी पढ़ना अहले अ़रब का तरीक़ा था (सफ़र में ऊँटों के साथ चलते हुये अशआ़र पढ़ना हुदी कहलाता है) सहाबा–किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुम) के ज़मानें में भी हुदी पढ़ी जाती थी और ये अशआ़र ही होते थे जो खुश आवाज़ी से पढ़े जाते थे और किसी सहाबी से इस पर एतराज मन्कूल नहीं है बल्कि बाज़ औक़ात ऊँटों को हरकत देने के लिये और कभी लज़्ज़त हासिल करने के लिये इसका मुतालबा करते थे।

हदीस– हज़रत अम्र बिन शरीद (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैं एक दिन रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के पीछे सवार हुआ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुझे उमइया बिन अबू सल्त के अशआ़र में से कुछ अशआ़र याद हैं मैंने कहा जी हाँ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया तो सुनाओ

फिर मैंने एक शेअ़र सुनाया फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया और सुनाओ फिर मैंने एक शेअ़र और सुनाया फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया मज़ीद सुनाओ यहाँ तक कि मैंने सौ शेअ़र सुनाये।
(मुस्लिम–सही–5/395-ह०–5885)

हदीस– जनाब सईद बिन मुसइयब (रहमतुल्लाह अ़लैह) ने बयान किया है कि हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) हज़रत हस्सान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के पास से गुज़रे जबकि वो मस्जिद में अशआ़र पढ़ रहे थे तो हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने उन्हें तेज़ नज़रों से देखा तो उन्होंने जवाब दिया बिला शुबा में इस मस्जिद में शेअ़र पढ़ा करता था और इसमें वो अ़ज़ीम हस्ती मौजूद होती थी जो आपसे बहुत ज़्यादा अफ़ज़ल थी।
(अबू दाऊद–सुनन–6/761-ह०–5013)
(नसाई–सुनन–1/299-ह०–719)

हदीस– हज़रत उबई बिन काअ़ब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया बिला शुबा कई शेअ़र हिकमत भरे होते है।
(अबू दाऊद–सही–6/759-ह०–5010)
(बुख़ारी–सही–5/649-ह०–6145)

हदीस– हज़रत इब्ने अब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया – बाज़ अशआ़र में हिकमत है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/521-ह०–2846)

मज़कूरा अहादीस इस बात पर दलालत करती हैं कि अच्छे अशआ़र से लोंगो को फ़वाइद हासिल होते हैं और बाज़ लोग नसीहत पाते है क्योंकि बाज़ अशआ़र में हिकमतें

और उम्दाह मिसालें ज़िक्र की जाती हैं और वो अशआ़र जिनमें अल्लाह व रसूल और औलिया-किराम का तज़किरा हो या अल्लाह व रसूल की मुहब्बत की तरफ राग़िब करे और हक़ व बातिल में पहचान करायें ऐसे अशआ़र बाइसे अज्र है।

सिमाअ़ दिलों और रूहों में अ़जीब तासीर पैदा करता है और बाज़ नग़मात से खुशी हासिल होती है और बाज़ नग़मात ग़मगीन कर देते है और बाज़ नग़मात से आज़ा में हरकत पैदा होती है और जिसको अच्छा और बेहतर सिमाअ़ मुतास्सिर न करे या आज़ा में हरकत न दे तो वो नाक़िस है और वो राहे एतदाल से हटा हुआ है और वो रूहानियत से दूर है और उसकी तबीयत में बहुत सख़्ती है यहाँ तक कि उसकी सख़्ती ऊँटों और परिन्दों और तमाम जानवरों की सख़्ती से बढ़कर है क्योंकि तमाम जानवर और परिन्दे मोजून नग़मात से मुतास्सिर होते हैं यही वजह है कि परिन्दे हज़रत दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) की आवाज़ सुनने के लिये उनके सर मुबारक के ऊपर फ़जा में खड़े हो जाते थे और इसी तरह ऊँटों पर वज़न लादकर हुदी पढ़ी जाती थी और ऊँट अपने ऊपर लदे हुये वजन को हल्का महसूस करते हुये चलते रहते थे।

नोहा की आवाजें और नग़मात और तासीर ग़म को उभारती और रुलाती हैं और ग़म दो तरह का होता है एक अच्छा ग़म जो कि क़ाबिले तारीफ़ और दूसरा मज़मूम (बुरा, ख़राब) और मज़मूम ग़म वो है जो फ़ौत शुदा चीज़ पर किया जाये जैसा कि

इरशादे खुदावन्दी है-

ताकि तुम उस चीज़ पर ग़म न करो जो तुमसे फ़ौत हो गई (सू०-हदीद-23)

और फ़ौत होने वालों पर ग़म करना, नोहा की आवाज़ें व नग़मात हराम हैं और जो शख़्स दीन ईमान के सिलसिले में अपनी कोताही पर ग़मगीन होता है और ख़ताओं पर रोता है और इस सिलसिले में रोना या रोने की सूरत बनाना या ग़मगीन होना सब कुछ जाइज़ और बेहतर है जैसा कि हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) चालीस साल तक रोये इसी तरह दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) का नोहा भी अच्छा था कि उनका मुसलसल रोना और ग़मगीन होना ख़ताओं की वजह से था और आप अपने अल्फाज़ और नग़मात से रोते थे और ये नोहा क़ाबिले तारीफ़ और अच्छा है क्योंकि अच्छे काम की तरफ़ ले जाने वाला काम भी अच्छा होता है

खुशी के वक़्त सिमाअ़ सुनना ताकि खुशी में इज़ाफ़ा हो अगर ये खुशी मुबाह और जाइज़ हो तो सिमाअ़ भी जाइज़ है जैसे ईद के दिनों में, शादी के मौक़े पर किसी शख़्स के सफ़र से वापसी पर, वलीमा, अ़क़ीक़ा, बच्चे की पैदाइश, उसके ख़त्ना के मौक़े पर और क़ुरान पाक हिफ़्ज करने के मौक़े पर अशआ़र पढ़ना नाअ़त ख़्वानी या सिमाअ़ का इहतिमाम करना जाइज़ है ये तमाम कामों पर सिमाअ़ मुबाह है क्योंकि इसके ज़रिये खुशी का इज़हार किया जाता है और खुश आवाज़ी दिल के सुरूर को बढ़ाती है और उसमें इज़ाफ़ा करती है सिमाअ़ बेहूदा और फुहश और ममनूआत बातों पर मुश्तमिल हो तो नाजाइज़ है।

–: सिमाअ़ कब हराम है :–

:– सुनाने वाली ऐसी औ़रत हो जिसकी तरफ़ देखना जाइज़ नहीं और उसके सुनने से फ़ित्ने का ख़ौफ़ हो तो सिमाअ़ हराम है।

:– सिमाअ़ के साथ इस्तेअ़माल होने वाले वो मज़ामीर व आलात जिनकी अहादीस मुबारका में मुमानियत आई है मसलन, डमरू (डुगडुगी) घण्टी या घण्टा, घुँघरू बगैराह।

:– सिमाअ़ फुहश कलामी या लग़वियात या किसी की बुराई पर मुश्तमिल हो या अल्लाह व रसूल या सहाबा पर झूठ बांधा गया हो या बद गोई या बद कलामी जिससे बुरे असरात पैदा हों तो ऐसा सिमाअ़ हराम है और सुनाने और सुनने वाले दोंनो गुनाहगार होंगे इसी तरह जिस कलाम में किसी औ़रत का कोई वस्फ़ बयान हो क्योंकि मर्दो के सामने किसी औ़रत का वस्फ़ बयान करना नाजाइज़ है लेकिन कुफ़्फ़ार और बदमज़हब और अहले बिदअ़त की मज़म्मत में कलाम पढ़ना जाइज़ है जिस तरह हज़रत हस्सान बिन साबित (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के सामने कुफ़्फ़ार को जवाब देते थे और खुद हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने उन्हें इस बात का हुक्म दिया था।

–: जब सिमाअ में शराबनोशी, ज़िना, बदकारी या खेलकूद, मस्ती, मज़ाक, बुरी शहबात में इज़ाफ़त, और बुरे असरात का पैदा होना, लह्व व लअ़ब वग़ैराह शामिल हो तो सिमाअ़ हराम है और ऐसी औ़रत का सिमाअ़ कहना जिसको देखना हराम हो या हराम व बुरे कामों की तरफ़ राग़िब करने वाला और अल्लाह के ज़िक्र और उसकी याद से ग़ाफिल करने वाला और उसकी फ़िक्र से बेख़ौफ़ करने वाला सिमाअ़ हराम है। और जो सिमाअ़ मज़कूरा उमूर से मुत्लक़न खाली हो तो जाइज़ व मुबाह है।

–: सिमाअ़ बिल मज़ामीर :–

आलाते लह्व व लाअ़ब हराम हैं लेकिन वो आलात जो लह्व व लाअ़ब के लिये न हो बल्कि जिससे अच्छी मौजून आवाज़ निकलती है वो जाइज़ है क्योंकि मोजून आवाज़ जब अच्छे अशआ़र से मिलती है तो उसका तआ़ल्लुक़ हिकमत भरे शेअ़र और अच्छी बातों से होता है अगर सिमाअ़ में कोई ख़िलाफ़े शरअ़ या ममनूअ़ बात हो तो सिमाअ़ हराम है चाहे वो खुश आवाज़ी से हो या न हो मोजून कलाम हो और उसके साथ मज़ामीर का इस्तेअ़माल हो तो वो सिमाअ़ इंतिहाई खुबसूरत व लज़्ज़तदार और मज़ीद असरदार होता है और वो हालते वज्द पैदा करता है और उसका इदराक बातिनी हुस्न के ज़रिये रूह को भी मुतास्सिर करता है इसलिये ये कहना ग़लत न होगा कि मज़ामीर और मोजून कलाम जिस्म और जान की तरह हैं जब ये दोनों मिलते हैं तो एक अजीब लुत्फ़ अन्दोज़ कैफ़ियत और हालते वज्द की कैफ़ियत इन्सान पर तारी होती है जो उसके दिल और रूह और आज़ा को मुतास्सिर करती है और मज़ामीर के साथ अच्छा और बेहतर और मोजून कलाम को पढ़ा जाये तो वो जाइज़ व मुबाह है जो कि अहादीस से साबित है।

हदीस– उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) मेरे घर तशरीफ़ लाये तो मेरे पास अन्सार की दो लड़कियाँ दफ़ के साथ जंगे बुआ़स में अन्सार की बहादुरी के गीत गा रही थीं हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने जब ये देखा तो फ़रमाया– रसूलुल्लाह के घर में शैतानी बाजा ये सुनकर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम)

ने फ़रमाया ऐ अबू बक्र इन्हें रहने दो हर क़ौम की ईद होती है और ये हमारी ईद है इमाम मुस्लिम की रिवायत में इतना इज़ाफ़ा है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम) चादर ओढ़े आराम फ़रमा रहे थे तो जब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) ने उन्हें डाँटा तो आप (सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम) ने चेहरे अनवर से चादर मुबारक हटाई और फ़रमाया–ऐ अबू बक्र इन्हें रहने दो ये अइयामे ईद है।

(बुख़ारी–सही–1/582-ह०–949)
(बुख़ारी–सही–4/153-ह०–3931)
(नसाई–सुनन–1/605-ह०–1596-1600)
(मुस्लिम–सही–2/351-ह०–2063)
(इब्ने माजा–सुनन–2/37-ह०–1898)
(इब्ने हिब्बान–सही– 6/738-ह०–5871)
(बैहक़ी–शुअ़बुल–ईमान–4/226-ह०–5110)

नबी पाक (सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम) के घर मुबारक में मज़ामीर के साथ अशआर पढ़ना और हुजूर (सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम) का खुद सुनना और अबू बक्र के डाँटने पर उन्हें रोकना और ये फ़रमाना कि इन्हें मत रोको बल्कि दफ़ के साथ अशआर पढ़ने दो ये तमाम मज़कूरा बातें इस पर दलालत करती है कि मज़ामीर के साथ मोज़ून कलाम जाइज़ है। और खुशी के मौक़े पर मिज़मार के साथ मौज़ून कलाम पढ़ना भी जाइज़ है।

हदीस– हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम) मदीने में किसी जगह से गुज़र रहे थे कि देखा कि कुछ बच्चियाँ दफ़ बजा रही हैं और ये गा रही हैं कि हम बनू नज्जार की बच्चियाँ है और मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम) क्या खूब पड़ोसी है ये सुनकर आप

(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– कि अल्लाह तआ़ला जानता है कि मैं तुमसे मुहब्बत करता हूँ।
(इब्ने माजा–सुनन–2/38-ह०–1899)

नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) का उन बच्चियों से मुहब्बत रखना और उन्हें दफ़ के साथ गाने से न रोकना बल्कि ख़ुशी का इज़हार करते हुये ये कहना कि अल्लाह तआ़ला जानता है कि मैं तुमसे मुहब्बत रखता हूँ ये इस बात की दलील है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने मज़ामीर के साथ गाने को ना पसंद नहीं फ़रमाया बल्कि इस फ़ेअ़ल को पसंद फ़रमाया।

हदीस– हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने अपनी एक क़राबतदार अन्सारिया की शादी करवादी फिर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) तशरीफ़ लाये और पूछा कि तुमने दुल्हन को र‘वाना कर दिया तो अ़र्ज़ किया गया कि जी हाँ फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया उसके साथ किसी को भेजा है जो गीत गाये क्योंकि अन्सारी गीत गाने को पसंद करते हैं हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हा) ने अ़र्ज़ किया कि नहीं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया अगर तुम उसके साथ किसी को भेज देतीं जो ये कहती ‘‘हम तुम्हारें पास आई हैं–हम तुम्हारें पास आई हैं’’ अल्लाह तआ़ला हमें भी खुश रखे और तुम्हें भी खुश रखे।
(इब्ने माजा–सुनन–2/38-ह०–1900)

मज़कूरा हदीस में हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने इस बात पर ख़ास तवज्जै दी है कि दुल्हन के साथ किसी गाने वाली को भेजना चाहिये ताकि अन्सारी जो गीत गाने और सुनने को पसंद करते हैं ताकि उनके दिल

खुश हों और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) का खुद इस बात को पसंद करना कि दुल्हन कि साथ गीत गाने वाली भी जायें यानी अन्सारियों की पसंद के साथ-साथ हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) को भी यह बात पसंद थी तो वाज़ेह हुआ कि गाना हराम नहीं है अगर उसमें लग़वियात या फुहश कलामी न हो तो हर सूरत जाइज़ है और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की पसंद भी है।

हदीस- सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) मक्का मुकर्रमा से हिजरत फ़रमाकर जब मदीना तइयबा तशरीफ़ लाये तो अन्सार की लड़कियों ने आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की आमद के मौक़े पर दफ़ बजाकर एक कसीदा पढ़ा जिसके अशआ़र का तजुर्मा ये है:-

''वदाअ़ की घाटियों से चौदहवीं का चांद हम पर तुलूअ़ हुआ है तो हम पर शुक्र वाजिब है कि जब तक बुलाने वाला अल्लाह के लिये बुलाये ऐ हम में मबऊ़स होने वाले नबी आप ऐसे अम्र के साथ तशरीफ़ लाये हैं जिसकी इताअ़त की जायेगी''।

(मजउज्ज़वाइद-8/1191-किताबुल अदब)

मज़कूरा हदीस भी सिमाअ़ बिल मज़ामीर के जाइज़ होने पर दलालत करती है।

हदीस- हज़रत आमिर बिन साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि मैं एक शादी में मौजूद था वहाँ पर कुरज़ा बिन कअ़ब और अबू मसऊ़द अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) मौजूद थे और वहाँ पर लड़कियाँ गाना गा रही थी मैंने अ़र्ज़ किया कि तुम दोंनो नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के सहाबी हो और तुम दोनों बदरी भी हो और तुम्हारे सामने ये काम हो रहा है

वो दोनो हज़रात फ़रमाने लगे कि तुम्हारा दिल चाहे तो तुम हमारे साथ सुनो वरना यहाँ से चले जाओ क्योंकि हमारे वास्ते शादी के मौक़े पर रूख़सत दी गई है क्योंकि शादी एक खुशी है इसमें मुबाह खेलों की इजाज़त दी गई है और गाना अगर हराम चीज़ों से खाली हो तो मना नहीं है।
(नसाई–सुनन–2/441-ह०–3388)

मज़कूरा हदीस में सहाबा–किराम के अ़मल से ये बात साबित होती है कि हर वो खेल मुबाह है जो हराम कामों से खाली हो और गाना भी मुबाह है अगर उसमें लग़वियात न हो।

हदीस– हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि एक बार ईद के दिन हब्शी आकर मस्जिद नबवी में ढ़ालों, व तलवारों और नेज़ों से खेलने लगे तब हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने मुझे बुलाया और अपनी चादर मुबारक से मुझे पर्दा कराया तो मैंने आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के शाने मुबारक पर सर रखा और खेल देखने लगी यहाँ तक कि जब मैं उनके खेल से सेर हो गई तो खुद वापस अन्दर आ गई।
(मुस्लिम–सही–2/352-ह०–2064)
(नसाई–सुनन–1/605-ह०–1597,1598)

हदीस– हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के पास हब्शी अपने तीरों तलवार से खेलते थे कि हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) आये और कंकरियों की तरफ़ झुके कि उनको मारें तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ उ़मर इनको खेलने दो।
(मुस्लिम–सही– 2/354-ह०–2069)

हदीस– सरकारे दो अ़ालम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया हलाल और हराम में फ़र्क़ फ़क़त दफ़ बजाने और आवाज़ों का है यानी हराम चोरी से होता है। और हलाल शौहरत से।
(तिर्मिज़ी–सही–1/599-ह०–1088)
(इब्ने माजा–सुनन–2/36-ह०–1896)
(नसाई–सुनन– 2/436-ह०–3374)

हदीस– हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया निकाह को मशहूर करो और अ़क्द बाँधों मस्जिदों में और दफ़ बजाओ।
(तिर्मिज़ी–सही–1/599-ह०–1089)
(इब्ने माजा–सुनन–2/36-ह०–1895)

मज़कूरा वाला दोंनो हदीस में आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने मज़ामीर का हुक्म फ़रमाया और निकाह के साथ मज़ामीर और गाने को ख़ास कर दिया और जिस चीज़ का हुक्म सरकारे दो अ़ालम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) फ़रमादें तो वो चीज़ कैसे हराम हो सकती है बल्कि मज़ामीर को हराम कहना हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) के हुक्म की तौहीन और हदीस से इन्हिराफ़ है यानी निकाह के पुर मसर्रत मौक़े पर गाना और मज़ामीर बजाना ये आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) के हुक्म की ताअ़मील है बशर्ते फ़ित्ने का ख़ौफ़ न हो और कलाम में लग़वियात न हो और लह्व व लाअ़ब पर मुश्तमिल न हो।

हदीस– रुबई बिन्ते मुअ़व्विज (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) बयान करती है कि हुज़ूर (सल्लललाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) मेरी शबे ज़िफ़ाफ़ की सुबह को मेरे पास तशरीफ़ लाये (ज़िफ़ाफ़–यानी दुल्हन की दूल्हा के घर र'वानगी) उस वक़्त हमारी लौडियाँ दफ़ बजाती थीं और मरसिया गाती थीं

और हमारे बाप दादाओं में से उन लोगों का तज़किरा कर रही थी जो जंगे बदर में शहीद हुये थे तभी उनमें से एक ये मिस्रा गाने लगी कि हमारे दरमियान में नबी मौजूद है जो कल की बात जानते हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि इस बात को न बोलो बल्कि वही कहो जो पहले कह रही थीं।
(बुख़ारी–सही–4/191-ह०–4001)
(बुख़ारी–सही–5/147-ह०–5147)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/599-ह०–1090)
(अबू दाऊद–सुनन–6/709-ह०–4922)

मज़कूरा हदीस में भी हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने मज़ामीर के साथ मरसिया गाने को ना पसंद नहीं किया और न मना फ़रमाया बल्कि आपका ये फ़रमाना कि वही कहो जो पहले कर रही थीं तो वाज़ेअ़ हुआ कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) को उनका गाना पसंद था इसलिये आपने उनको वही गाने के लिये हुक्म फ़रमाया तो मज़कूरा रिवायात व दलाइल से ये साबित हुआ कि सिमाअ़ हराम नहीं है बल्कि जाइज़ व मुबाह है।

अब एक सवाल पैदा होता है कि इन रिवायात में दफ़ का तज़किरा है लेकिन ढ़ोलक और हरमोनियम, व तबले का तज़किरा नहीं है जो सिमाअ़ में इस्तेअ़माल होते हैं तो इसका जवाब ये है कि ढ़ोलक, हरमोनियम व तबला बग़ैराह जो सिमाअ़ में इस्तेअ़माल होते हैं इनकी मुमानियत भी किसी हदीस से साबित नहीं है तो किस बुनियाद और दलील पर ढ़ोलक व हरमोनियम और तबला को नाजाइज़ या हराम किया जा सकता है और अहादीस में इनकी मुमानियत का न होना ही सबसे बड़ी दलील है कि मुबाह चीज़ों की तरह ये आलात ढ़ोलक व हरमोनियम और तबला भी मुबाह है और अगर कोई ये कहे कि ढ़ोलक व हरमोनियम और

तबला नाजाइज़ है तो उसके कहने से ये नाजाइज़ नहीं हो जाता क्योंकि शरीअ़त में किसी चीज़ का नाजाइज़ होना अ़क्ल और ज़ाती राय पर मुन्हसिर नहीं है बल्कि कुरान व अहादीस के मुस्तनद दलाइल और क़ियास व इज्माअ़ पर मुन्हसिर है और ढ़ोलक व हरमोनियम की मुमानियत न कुरान से साबित है न हदीस से साबित है और न क़ियास से और न ही इस पर इज्माअ़ है हाँ अगर ये चीज़े लह्व व लअ़ब के लिये इस्तेअ़माल हों तो नाजाइज़ हो जायेगी।

ढ़ोलक को अरबी में अलकबरू कहते हैं और इसकी जमा किबारुन है और तबलुन भी कहते है यानी बड़ा ढ़ोल और इसकी जमा तुबूलुन है और तमाम कुतूबे अहादीस में इसकी मुमानियत कहीं पर वारिद नहीं है और जिस चीज़ की मुमानियत कुरान व अहादीस में न हो या क़ियास से भी साबित न हो या जिस पर इज्माअ़ न हो तो वो हर चीज़ मुबाह है।

हदीस– हज़रत इब्ने अब्बास (रजिअल्लाहु तअ़ाला अन्हुमा) से रिवायत कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया :–
जिस चीज़ को अल्लाह तअ़ाला ने हराम क़रार दिया वो हराम है और जिसको हलाल क़रार दिया वो ह़लाल है और जिस चीज़ के बारे में ख़ामोश रहा वो माफ़ है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/942–ह०–1726)
(इब्ने माज़ा–सुनन–3/95–ह०–3367)
(अबू दाऊद–सुनन–4/942–ह०–3800)
(ह़ाकिम–अलमुस्दरक–4/129-ह०–7115)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–6/250-ह०–6124)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–10/12-ह०–19699)
(देलमी–अल फिरदौस–2/158-ह०–2800)

हदीस– सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया–

–अल्लाह तआ़ाला ने बाज़ चीजे़ फ़र्ज़ फ़रमाई हैं उन्हें ज़ाया मत करो और जो हराम कर दिया उनकी हुरमत मत तोड़ो और जो हुदूद मुक़र्रर किये हैं उन हुदूद के आगे मत बढ़ो और बाज़ चीज़ों में उसने सुकूत (ख़ामोशी) इख़्तियार की है (और ये सुकूत किसी भूल की वजह से नहीं बल्कि रहमत व करम की वजह से है तो उनमें बहस न करो। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–22/222-ह०–589) (मिश्कात–325)

मज़कूरा अहादीस मुबारका इस बात पर दलालत करती हैं कि जिस चीज़ को अल्लाह तआ़ाला ने हराम क़रार न दिया हो वो किसी सूरत हराम नहीं हो सकती बल्कि वो जाइज़ व मुबाह होती हैं। हदीस पाक में मौसिक़ी के हवाले से मआ़ज़िफ़ और मज़ामीर लफ़्ज़ों का तज़किरा मिलता है मआ़ज़िफ़ मेअ़ज़फ़ की जमा है और इसका माना है ख़ुशी, शादमानी देने वाला आला, व बाजा और मज़ामीर मिज़मार की जमा है इसका माना है साज़, बाजा, दफ, बाँसुरी, मुँह का बाजा और मुतरिबों के साज़ और मुतरिब का माना है क़व्वाल, और ख़ुश करने वाला तो मालूम हुआ कि हदीस पाक में मज़ामीर का ज़िक्र कई हदीसों में मिलता है और मज़ामीर का माना सिर्फ दफ़ नहीं है बल्कि दीगर साज़ और बाजे हैं जो कि मुबाह है मज़ामीर का माना इस बात पर भी दलालत करता है कि दफ़ के अलावा दीगर साज़ बाजे जिनका नाजाइज़ होना कुरान व अहादीस से साबित नहीं है वो सब मुबाह के दर्जे में आते हैं और मआ़ज़िफ़ के माइने पर अगर हम ग़ौर करे तो इसका माना है बाजा और ख़ुशी व शादमानी देने वाले आलात लेकिन इसमें किसी आला को खास नहीं किया गया दूसरी बात ये है कि ख़ुशी देने वाला आला तो दफ़ भी है तो दफ़ भी हराम हो जायेगी, तो हासिल नतीजा है ये कि जिन आलाते मौसिक़ी की मुमानियत कुरान व अहादीस से साबित है सिर्फ वही आलात नाजाइज़ व हराम है बाकी मुबाह चीज़ों की तरह

मुबाह हैं वशर्ते लह्व व लअ़्व और फ़ुहश कलामी और लग़वियात के लिये न हो और उनसे फ़ित्ने का ख़ौफ़ न हो तो जाइज़ व मुबाह हैं और जिन आलात की मुमानियत हदीस पाक में मज़कूर है उनमें से बाज़ ये हैः–

(1)ः– जरसुन– (घण्टी)
(2)ः– जुल्जुलुन– (घुँघरू, जांझ)
(3)ः– दक्काकतुन– (घण्टा)
(4)ः– कूबतुन– (डमरु, डुगडुग़ी)

चुनांचा हदीस पाक में हैः–
हदीस– हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने शराब, जुऐ और डुगडुगी बजाने से मना फ़रमाया। (अबू दाऊद–सुनन–4/874-ह०–3685)

हदीस– हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– घण्टी शैतान का बाजा है।
(मुस्लिम–सही–5/312-ह०–5548)

हदीस– हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया फ़रिश्ते उन मुसफ़िरों के साथ नहीं रहते जिनके साथ कुत्ता या घण्टी हो।
(मुस्लिम–सही–5/311-ह०–5546)

हदीस– उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– फ़रिश्ते उस मकान में दाख़िल नहीं होते जिस मकान में घुँघरू या घण्टी हो और फ़रिश्ते उन लोगो के साथ नहीं रहते जिने साथ घण्टा हो (नसाई–सुनन–3/528-ह०–5228)

यहाँ ये भी बताते चलें कि मज़कूरा आलात जैसे घण्टी, घुँघरू, घण्टा, डमरू, डुगडुगी बग़ैराह ये भी मज़ामीर में आते है तो जिस मज़ामीर की मुमानियत अहादीस मुबारका में वारिद है वो ये आलात है न कि ढ़ोलक, हरमोनियम और तबला बग़ैराह।

हज़रत जुन्नून मिश्री (रहमतुल्लाह अ़लैह) फ़रमाते हैं कि अच्छा सिमाअ़ एक वारिद होने वाला कलामे हक़ है जो दिलों को हक़ की तरफ़ हरकत देता है तो जो कोई इसे हक़ के साथ सुने तो उसने हक़ को पा लिया और जो शख़्स नफ़्सानी ख़्वाहिशात के लिये सुने वो बेदीन है सिमाअ़ का बातिन इ़बरत है और अहले माअ़रिफ़त के लिये सिमाअ़ अरवाह की ग़िज़ा है क्योंकि ये एक ऐसा वस्फ़ है जो तमाम आमाल से बारीक है और इस बारीकी की वजह से रक़ीक़ तबियत से ही इसका इदराक होता है चूँकि ये अपने अह़ल लोंगो के लिये लतीफ़ (पाकीज़ा) और साफ़ व शिफ़ाफ़ है इसलिये अगर बातिन साफ़ हो तो इसका इदराक होता है।

हज़रत अम्र बिन उस्मान मक्की (रहमतुल्लाह अ़लैह) फ़रमाते हैं कि वज्द की कैफ़ियत किसी इ़बारत से बयान नहीं हो सकती क्योंकि ये मोमिन और यक़ीन करने वाले बन्दों के पास अल्लाह तआ़ला का राज़ है और ये हक़ की तरफ़ कश्फ़ (इल्हाम) है और वज्द खुसिसियात का पहला दर्जा है और ग़ैब की तस्दीक़ की मीरास है जब सिमाअ़ सुनने वाले हालते वज्द में उसे चख़्ते हैं तो उनके दिलों में उसका नूर चमकता है सिमाअ़ दिल के रास्ते आलमे रूहानी तक पहुँचता है और आज़ा में हरकत होती है और सिमाअ़ से दिल की सफ़ाई होती है और ये सफ़ाई कश्फ़ का बाइस बनती है।

जो बात पहली बार सुनी जाये उस बात का दिल पर ज़्यादा असर होता है और दूसरी बार असर कम हो

जाता है फिर तीसरी बार और चौथी बार धीरे-धीरे असर कम होता जाता है तो क़व्वाल लोग शेअ़र बदल-बदल कर पढ़ते हैं और हर नये शेअ़र पर सिमाअ़ सुनने वाले के दिल और रूह पर मज़ीद अ़सर होता है और वो हालते वज्द की गहराईयों में उतर जाता है और मज़ामीर से ज़ईफ़ वज्द इन्तिहाई जोश में आ जाता है और आवाज़ और साज़ दोंनो के जमा होने से वो वज्द क़वी हो जाता है।

जो सिमाअ़ सुनने वालों के दिलों पर पाकीज़ा असरात छोड़े और लग़ज़िशों से गुरेज़ पर मजबूर करे वो सिमाअ़ दीन में मुस्तहब शुमार किया जाता है सुरीली आवाज़ वारिद होने वाली एक कैफ़ियत होती है जो बेचैन दिलों को हक़ तअ़ाला की तरफ़ ले जाती है चुनांचा जो उसकी तरफ़ हक़ तरीक़े से कान लगाता है वो हक़ को पा लेता है और दिल बारगाहे इलाही में हाज़िर रहता है और उसके कान खुले रहते हैं और जो नफ़्सानी ख़्वाहिशात के लिये सुनता है वो बेदीन हो जाता है सिमाअ़ अहले माअ़रिफ़त के लिये एक लतीफ़ गिज़ा है अहले इ़ल्म व सूफ़िया-किराम कलामे सिमाअ़ और उसके मअ़ानी पर ग़ौर करते हैं और उसमें इतना मुस्तग़रक़ हो जाते हैं कि जिसका ज़िक्र हो वो तसुव्वुरात में उसका मुशाहदा करते हैं और हालते वज्द में आते हैं चुनांचा इस हालत में कुछ तो कपड़े फाड़ते हैं कुछ चीखो पुकार करते हैं कुछ रोते हैं यानी हर इन्सान अपने-अपने मरतबे के मुताबिक़ ये अ़मल करता है और बाज़ सामईन ऐसे भी होते हैं जो माअ़रिफ़त के जाम पीते हैं मगर मज़ीद प्यासे रहते हैं और सिमाअ़ के ज़रिये अपने महबूब का मुशाहदा करते हैं सिमाअ़ इन्सान के हर उज़्व के लिये खुराक होती है अगर आँख तक पहुँचे तो वो रोने लगती है और जुबान तक पहुँचे तो चीखती चिल्लाती है और हाथ तक पहुँचे तो वो कपड़े फाड़ता और अगर यही खुराक पाँव को मिल जाये तो वो रक़्स (नाचना, कूदना) करता है।

-: साज़ व बाजों की मुख़्तलिफ़ अक़साम :-

(1) **सितार**– तम्बूरे की क़िस्म का एक बाजा, शुरु में इसमें तीन तार होते थे इसलिये ये सितार कहलाया।

(2) **बरबत या ऊद**– एक क़िस्म का बाजा या साज़ जिसकी शक्ल बतख़ के सीने की तरह होती है।

(3) **दफ़**– ढपली, एक हाथ से बजाने वाला एक साज़।

(4) **यराअ़ या शब्बातुन**– बांसुरी।

(5) **जुलजुल**– जांझ, घुंघरु, घण्टी।

(6) **अलकबरु या तबलुन**– ढ़ोल या बड़ा ढ़ोल।

(7) **अलकूबतुन**– डमरु, डुगडुगी, बन्दर वालों की ढ़पली।

(8) **जरसुन**– घण्टी।

(9) **दक़्क़ाक़तुन**– घण्टा।

(10) **ज़ेर व बम**– तबले या नक़्क़ारे का दायाँ या बायाँ रुख। जिसमें एक से कम और दूसरे से बुलन्द आवाज़ निकलती है।

(11) वतर– बाजे का तार (सारंगी)।

-: सिमाअ़ पर एतराज़ात और उनके जवाबात :-

एतराज़ न०-1- शायरों की पैरवी बहके हुये लोग ही करते हैं क्या तूने नही देखा कि वो (शुअ़रा) हर वादी (ख़्याल) में (यूँ ही) सर गरदां फिरते रहते हैं और ये कि वो ऐसी बातें कहते है जिन्हें (वो खुद) नहीं करते।
(शुअ़रा-आ०-224,-225,-226)

जवाब- बाज़ कम इल्म और जाहिल क़िस्म के लोग मज़कूरा आयते करीमा को सिमाअ़ के एतराज़ में बतौर दलील पेश करते हैं जबकि इसका जवाब खुद इस सूरत की अगली आयत में मौजूद है अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है ''कि सिवाय उन शुअ़रा के जो ईमान लाये और नेक अ़मल करते हैं और अल्लाह तआ़ला को कसरत से याद करते हैं''।
(सू०-शुअ़रा-आ०-227)

एतराज़ न०-2- और लोंगो में से कुछ ऐसे भी है जो बेहूदा कलाम खरीदते हैं ताकि बग़ैर सूझ बूझ के लोगों को अल्लाह तआ़ला की राह से भटका दें।
(सू०-लुकमान-आ०-6)

जवाब- इससे मुराद सिर्फ बेहूदा कलाम है न कि अच्छे कलाम और मज़कूरा कुरान मज़ीद की आयत में उन लोंगो का तज़किरा किया गया है जो लह्व व लअ़ब की बातें खरीदते हैं और मैं भी यही कहता हूँ जो सिमाअ़ लह्व व लअ़ब के लिये हो या उसमें बेहूदा कलाम हो सिर्फ वो हराम है और खुश आवाज़ी से अच्छा और मौजून कलाम क़तअ़न हराम नहीं है जैसा कि सू० शुअ़रा में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया वो शुअ़रा बहके हुये नहीं है जो नेक अ़मल करते है और अल्लाह तआ़ला को कसरत से याद करते हैं ऐसे शुअ़रा अललाह के नज़दीक अच्छे शुअ़रा है और जो कलाम

हक़ पर मबनी हो और उसमें ख़ैर और भलाई हो और वो राहे खुदावन्दी की तरफ़ माइल करे तो वो कलाम क़ाबिले तारीफ़ है और जो कलाम राहे खुदावन्दी से गुमराह करे तो वो हराम और क़ाबिले मज़म्मत है क्योंकि अगर हर शायर अल्लाह के नज़दीक बुरा और क़ाबिले मज़म्मत होता तो नात ख़्वानी कहने वाले शायर गुमराह और बेदीन होते और अगर दीन इस्लाम में शेअ़रो शायरी हराम होती हो तो नबी पाक (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) कभी न सुनते बल्कि इसे हराम क़रार देते और नात ख़्वानी में पढ़े जाने वाले अशआ़र भी हराम होते और मज़कूरा आयते करीमा से मुराद काफ़िर शुअ़रा हैं और ये आयत ज़ाती तौर पर हर अशआ़र के हराम होने पर दलालत नहीं करती।

एतराज़ न०–3– हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया तुममें से किसी का पेट पीप से भर जाये तो ये उससे बेहतर है कि वो अशआ़र से भरे।
(अबू दाऊद–सुनन–6/758-ह०–5009)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/524-ह०–2851)

जवाब– इससे मुराद ये है कि कोई शख़्स शेअ़रों शायरी में इस क़दर मुस्तग़रक़ हो जाये कि वो अल्लाह व रसूल के ज़िक्र और उसकी याद से ग़ाफ़िल हो जाये या उसका दिल राहे हक़ से बातिल की तरफ़ माइल हो जाये या उसका दिल ख़शीयते इलाही से ख़ौफ़ ज़दा होने की बजाय दुनियाँ की ज़ैबो ज़ीनत और उसकी मुहब्बत में मुब्तिला हो जाये या उसके अशआ़र लग़वियात, या बेहूदा या फुहश कलाम पर मुश्तमिल हों तो वो कलाम क़ाबिले मज़म्मत है और उसका पढ़ना व सुनना नाजाइज़ व हराम है मगर हद्दे एतदाल और हुदूदे शरीअ़त में रहते हुये अपने जॉक़ व फ़न से हक़ और अच्छे कलाम के साथ अशआ़र पढ़े तो बिला शुबा ये कारे ख़ैर है।

एतराज़ न०–4– बेशक अल्लाह तअ़ाला ने गाने वाली लौंडी और उसकी बैअ़ और उसकी क़ीमत को हराम क़रार दिया है। (मजमउज़्ज़वाइद–4/91– किताबुल बुयूअ़)

जवाब– मज़्कूरा हदीस में गाने वाली लौंडी से मुराद फ़ाहिशा औ़रत है और वो औ़रत जो माल व असबाब और पैसा लेकर गाती है और वो रक़्क़ासा औ़रत जो शराब की मजलिस में मर्दों के सामने गाती और नाचती है और ऐसी औ़रत का गाना सुनना और ऐसी मज़लिसें हराम हैं और अजनबी औ़रत का गाना जिससे फ़ित्ने का ख़ौफ़ हो वो गाना हराम है लेकिन जब लौंडी अपने मालिक के लिये गाये तो जाइज़ है या फिर जिससे फ़ित्ने का ख़ौफ़ न हो तो जाइज़ है जैसा कि हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) के हुजरे मुबारक में दो लड़कियों ने दफ़ के साथ गाना गाया और हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने समाअ़त फ़रमाया क्योंकि उस घर में फ़ित्ने का ख़ौफ़ न था।

एतराज़ न०–5– पस क्या तुम इस कलाम से तअ़ाज्जुब करते हो और तुम हंसते हो और रोते नहीं हो तुम ग़फ़लत के खेल में पड़े हो। (सू०–नज्म–59,60,61)

जवाब– तो इस तरह तो हंसना और न रोना भी हराम हो जायेगा बल्कि इस आयते करीमा से मुराद लह्व व लअ़ब है

एतराज़ न०–6– हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरकारे दो अ़ालम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया सबसे पहले शैतान ने नोहा किया और सबसे पहले उसी ने गाना गाया।
(मजमउज़्ज़वाइद–8/119– किताबुल अ़दब)

जबाब– वो अशआ़र जिनमें फुहश कलामी न हो या वो–

अशआ़र जिनसे फ़ित्ने का ख़ौफ़ न हो या वो अशआ़र जो लह्व व लअ़ब के लिये वज़अ न किये गये हों वो तमाम अशआ़र इस हदीस से मुस्तस्ना हैं और अच्छे अशआ़र मुबाह हैं जिस तरह नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने जो अशआ़र सुने या जिनका का हुक्म फ़रमाया और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के सामने लड़कियों का घर में गाना और जब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) मक्का मुकर्रमा से हिजरत करके मदीना तइयबा तशरीफ़ लाये तब लड़कियों ने दफ़ के साथ गाया और शादी के मौक़े पर नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के सामने लड़कियों ने दफ़ के साथ गाना गाया ये सब इस हदीस से मुस्तस्ना हैं अलग़रज़ अच्छे अशआ़र जिनमें बेहूदा व लग्व कलिमात न हो वो सब जाइज़ व मुबाह हैं।

एतराज़ न०–7- सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया जब कोई शख़्स गाने के साथ अपनी आवाज़ बुलन्द करता है तो अल्लाह तआ़ाला उसके काँधों पर दो फ़रिश्ते भेजता है जो अपनी ऐड़ियाँ उसके सीने पर मारता हैं जब तक वो ख़ामोश न हो जाये।
(मजमउज्ज़वाइद–8/1191– किताबुल अदब)

जबाब– मज़कूरा हदीस ऐसे ग़िना (राग, गाना, नग़मे) के बारे में हैं जिससे बुरे असरात दिल पर मुसल्लत हों और ऐसे ग़िना के बारे में हैं जो फुहश कलामी ओर लग़वियात पर मुशतमिल हो जिससे दिलों में शहवत और मख़लूक़ की मुहब्बत पैदा हो और ऐसे ग़िना के बारे में है जिससे फ़ित्ने का ख़ौफ़ हो।

एतराज़ न०–8– हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन गन्म से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि मुझे अबू आमिर या अबू मालिक अशअ़री (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) ने बयान किया है

कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया यक़ीनन मेरी उम्मत में कुछ ऐसे लोग ज़रूर पैदा होंगे जो– ज़िनाकारी, रेशम का पहनना, शराब नोशी और मज़ामीर को हलाल़ समझेंगे ये लोग पहाड़ के दामन में रिहायश रखेंगे और चरवाहे उनके मवेशी चराने के लिये सुबह शाम लायेंगे और ले जायेंगे उस दौरान में उनके पास कोई हाजत मन्द अपनी ज़रूरत लेकर जायेगा तो वो कहेंगे कि तुम अब वापस चले जाओ और हमारे पास कल आओ लेकिन अल्लाह तआ़ाला रात ही को उन्हें हलाक कर देगा और पहाड़ उन पर गिरा देगा उनमे से दूसरो कों बन्दर और खिंजीर की सूरत में मस्ख़ कर देगा वो क़यामत तक उसी हालत में रहेंगे।
(बुख़ारी–सही–5/399-ह०–5590)

जबाब– मज़कूरा हदीस में किसी ख़ास जमाअ़त को मुख़ातिब किया गया है जिनकी रिहायश गाह पहाड़ों पर होगी और वो दीन से ख़ारिज लोग होंगे जिन पर अल्लाह का अ़ज़ाब नाज़िल होगा जो ज़िनाकारी, शराब और रेशम का पहनना हलाल समझेंगे और रहा सवाल मज़ामीर का तो मज़ामीर तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने खुद समाअ़त फ़रमायी है जो कि कई अहादीस से साबित है जिसमें लफ़्ज़ मज़ामीर का ज़िक्र है और इस हदीस में मज़ामीर की उस अक़साम का ज़िक्र है जो मुत्लक़न हराम है जैसे डुगडुगी, घण्टी, घुंघरु बग़ैराह।

एतराज़ न०–9– हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ाला ने मुझको तमाम आ़लम के लिये रहमत व बरकत का सबब बनाकर भेजा है और मआ़ज़िफ़ व मज़ामीर, बुतों, सलीब, और जाहलियत की तमाम बुरी रस्मों और तरीक़ों के मिटाने का हुक्म दिया। (मिश्कात– 2/227-ह०–3486)

जवाब– मज़कूरा हदीस में भी मआज़िफ़ और मज़ामीर की उस अक़्साम का तज़किरा है जिसकी शरीअ़ते मुतह्रात ने मुमानियत फ़रमाई है अगर इससे मुराद हर साज़ व बाजा ले लिया लाये तो दफ़ भी हराम हो जायेगी क्योंकि दफ़ भी मज़ामीर की एक क़िस्म है।

एतराज़ न०–10- हज़रत नाफ़ेअ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हम हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) के साथ थे उन्होंने बाँसुरी की आवाज़ सुनी तो उन्होंने अपनी उंगलियाँ अपने कानों पर रख लीं फिर मुझसे पूछा ऐ नाफ़ेअ़ क्या तुम कुछ आवाज़ सुन रहे हो मैंने कहा नहीं तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने अपनी उँगलियाँ अपने कानों से हटा लीं और फ़रमाया कि मैं नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के साथ था तो आपने भी इस तरह की आवाज़ सुनी तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने ऐसा ही किया था।
(अबू दाऊद–6/711-ह०–4924, 6/712-ह०–4926)

जवाब– मज़कूरा हदीस में बांसुरी की आवाज़ से कानों में उँगलियाँ डालना बांसुरी के हराम होने पर दलालत नहीं करता क्योंकि ये बात ग़ौर तलब है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने हज़रत नाफ़ेअ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को इस बात हुक्म नहीं दिया और ना ही उनके सुनने पर एतराज़ किया बल्कि आपने खुद ऐसा किया अगर बांसुरी की आवाज़ हराम होती तो आप हज़रत नाफ़ेअ़ को भी कानों पर उँगलियाँ रखने का हुक्म देते बल्कि आप उस वक़्त अपनी समाअ़त और दिल को उस आवाज़ से बचाना चाहते थे ताकि वो ज़िक्रो फ़िक्र में रुकावट न बने इसी तरह हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने भी किया था लेकिन आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने हज़रत इब्ने ऊ़मर को मना नहीं फ़रमाया और न ही बाँसुरी की आवाज़ को हराम फ़रमाया–

इसलिये ये बात बाँसुरी की आवाज़ के हराम होने पर दलालत नहीं करती और हर सिमाअ़ को लह्व व लअ़ब पर मुश्तमिल नहीं कहा जा सकता क्योंकि अल्लाह तबारक व तआ़ला कुरान मजीद में इरशाद फ़रमाता है :-

जान लो कि दुनियाँ की ज़िन्दगी लह्व व लअ़ब ही है।
(सू०-हदीद-20)

इस आयते करीमा से ये मुराद लिया जा सकता है कि दुनियाँ की ज़िन्दगी अल्लाह के ज़िक्र और यादे इलाही और आख़िरत से ग़ाफ़िल कर सकती है मगर इस लह्व व लअ़ब से दुनियाँ की ज़िन्दगी हराम नहीं हो जाती जैसा कि इसके अलावा कई उमूर व अशया ऐसे हैं जो मुबाह हैं लेकिन वो ज़िक्रे इलाही से ग़ाफ़िल कर देते हैं अगर जो चीज़ अल्लाह के ज़िक्र और याद से ग़ाफ़िल करदे तो इस तरह बेशुमार मुबाहात हराम हो जायेंगे अगर जो सिमाअ़ अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न करे बल्कि उसमें अल्लाह का ज़िक्र हो तो वो सिमाअ़ मुस्तहसन है और इसी तरह आलाते सिमाअ़ जब लह्व व लअ़ब के लिये हों तो हराम हैं और लह्व व लअ़ब के लिये से मुराद ये है कि हराम कामों की तरफ़ ले जाने वाली शैः और लहव व लअ़ब मुत्लक़न हराम नहीं हैं।

जैसा कि हदीस पाक में है-
सरकारे दो अ़ालम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) फ़रमाते हैं कि मुसलमान का लह्व और खेलना तीन चीज़ों के अलावा बातिल है-

(1) अपनी जंगी सवारी घोड़े बग़ैराह को जंग के लिये तैयार करने के लिये खेलना।
(2) तीर कमान के साथ खेलना।
(3) अपनी बीवी के साथ खेलना।
(नसाई-सुनन-2/542-ह०-3611)

एक दूसरी हदीस है जिसमें आक़ा (अ़लैहिस्सलाम) और सइयदा आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने मस्जिदे नबवी में हब्शियों का खेल देखा और हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के रोकने पर आप (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ उ़मर इन्हें खेलने दो।

हदीस– हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमातीं हैं कि एक बार ईद के दिन हब्शी आकर मस्जिदे नबवी में ढ़ालो व तलवारों और नेज़ों से खेलने लगे तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने मुझे बुलाया और मैंने आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के शाने मुबारक पर सर रखा और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैह) ने मुझे अपनी चादर मुबारक से पर्दा कराया और उनके खेल को देखने लगी यहाँ तक कि मैं ही उनके खेल से सेर होकर लौट आती थी।
(मुस्लिम–सही–2/352-ह०–2064)
(नसाई–सुनन–1/605-ह०–1597,1598)

हदीस– हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के पास हब्शी खेलते थे अपने तीरों से कि हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) आये और कंकरियों की तरफ़ झुके कि उनको मारें तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– ऐ उ़मर इनको खेलने दो।
(मुस्लिम–सही–2/354-ह०–2069)

शवाफ़ेअ़ के मज़हब में है कि खुशी वग़ैराह में दफ़ का बजाना मुत्लक़न मुबाह है अगरचा जांझ के साथ हो और उन्होंने मुन्दरजा ज़ैल हदीस से इस्तिदलाल किया है–

हदीस– निकाह को ऐलानियाँ करो और उसे मसाजिद में अदा करो और निकाह पर दफ़ बजाओ।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/599-ह०–1088)
(इब्ने माजा–सुनन–2/36-ह०–1895)

हालाँकि हक़ीक़त ये है कि अच्छा सिमाअ़ ग़मग़ीन दिल को खुशी और दिल के बुझे हुये नूर को रोशन करता है अच्छा व उम्दाह सिमाअ़ सुनने वाले को हक़ की इताअ़त की तरफ़ रग़बत बढ़ाता है दिलों में अच्छे ख़्यालात पैदा करता है ये दीन इस्लाम में मुस्तहब और पसंदीदा अ़मल है और सलफ़े सालिहीन ने सिमाअ़ सुना और हलाल व हराम अल्लाह तआ़ला के अहकाम में से है किसी शख़्सियत और अ़क़्ल के फ़ैसले पर मौकूफ़ नहीं है और कोई भी शैः अपनी अ़क़्ल या ज़ाती राय से हराम नहीं ठहराई जा सकती जब तक कि कुरान व अहादीस से उसका हराम होना साबित न हो या फिर उस पर इज्माअ़ क़ायम न हो।

मदीनातुल औलिया सफ़ीपुर शरीफ़ उन्नाव (उ० प्र०) ये वो अ़ज़ीम सर ज़मीन है जहाँ से मीर सय्यद अ़ब्दुल-वाहिद बिलग्रामी (रहमतुल्लाह अ़लैह) जिनकी औलादें बिलग्राम शरीफ़ और माहरहरा शरीफ़ ख़ानकाहे बरकातिया में आराम फ़रमां हैं जिनसे सिलसिला बदायूँ शरीफ़ और बरेली शरीफ़ पहुँचा मीर सय्यद अ़ब्दुल वाहिद बिलग्रामी (रहमतुल्लाह अ़लैह) के पीरो मुर्शिद हज़रत मख़्दूम शाह सफ़ी (रहमतुल्लाह अ़लैह) मज़ामीर के साथ सिमाअ़ सुनते थे और सिलसिला ए सफ़विया के मुजद्दिद हज़रत मख़्दूम शाह मुहम्मद ख़ादिम सफ़ी (रहमतुल्लाह अ़लैह) फ़रमाते हैं कि अगर सिमाअ़ हराम होता तो मशाइख़े तरीक़त हज़रात जो कभी मुस्तहब को भी तर्क नहीं करते थे तो वो सिमाअ़ को कभी न सुनते और अल्लाह तआ़ला उन्हें बुलन्द और आ़ला मक़ाम से सरफ़राज़ न फ़रमाता (बहवाला-ऐनुल विलायत)

तमाम रिवायात व दलाइल से ये साबित हुआ कि सिमाअ़ बिल मज़ामीर जाइज़ है बशर्ते ममनूअ़ मज़ामीर पर मुश्तमिल न हो और फुहश और लग़बियात से खाली हो और किसी क़िस्म के फ़ित्ने का ख़ौफ न हो बल्कि खुश आवाज़ी से मौज़ून कलाम पढ़ा जाये और उसमें अच्छे और नसीहत व इबरत से लबरेज़ अशआ़र पढ़े जायें और उसमें

अल्लाह व रसूल नेक सालिहीन का तज़किरा हो और हिकमत भरे अशआ़र हों क्योंकि अच्छे और हिकमत भरे अशआ़र की आवाज़ कानों के ज़रिये दिल तक पहुँचती है और दिल के साथ-साथ रुह को भी मुतास्सिर करती है फिर दिल पर एक अ़जीब कैफ़ियत तारी होती जिसे वज्द कहते हैं और वज्द के सबब से जिस्मी आज़ा में हरकत होती है।

वज्द से बातिन में अचानक ऐसी कैफ़ियत तारी होती है कि जिस्म से इख़्तियार उठ जाता है हिकमत, व मुहब्बत और इश्क पर मबनी अशआ़र और अच्छी आवाज़ रूह के लिये नूरानी कुव्वत हैं और जब वज्द शैतानी और नफ़्सानी हो तो उसमें नूरानियत नहीं होती बल्कि उसमें तारीकी और कुफ़्र होता है और उसकी सरकशी में इज़ाफ़ा करती है और इस वज्द में रूह के लिये कोई कुव्वत नहीं होती और वज्द में जब रूहानी हरकात ग़ालिब हो तो ऐसा वज्द हक़ीक़ी और रूहानी होता है सिमाअ़ एक ऐसी चीज़ है जो जिस्म में हरकत पैदा कर देती है और वज्द अहले मुहब्बत की ग़िज़ा है और तालिबीन की कुव्वत का सबब है और सिमाअ़ कुछ लोगों के लिये फ़र्ज़ है और कुछ लोगों के लिये सुन्नत और कुछ लोगों के लिये बिदअ़त है ख़्वास के लिये फ़र्ज़, अहले मुहब्बत कि लिये सुन्नत और ग़ाफ़िलो के लिये बिदअ़त है यही वजह है कि दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) के सर पर परिन्दे ठहर जाते है कि आपकी आवाज़ सुन सकें।

हालते सिमाअ़ में आ़लमे मलाकूत से अरवाह पर अनवार नाज़िल होते हैं और आ़लमे जबारूत से दिलों पर अहवाल उतरते हैं जिससे सिमाअ़ सुनने वाले के आज़ा में हरकत पैदा होती है और बाज़ औक़ात उनके हरकात में हैरत पायी जाती है सिमाअ़ में बाज़ लोंगो पर ऐसा हाल ग़ालिब और क़वी होता है कि वो अपने हस्तो वुजूद से इस क़दर बे ख़बर हो जाते हैं कि उनके पाँव में कोई कील भी चुभ जाये तो उन्हें कुछ ख़बर नहीं होती।

और बाज़ लोग अल्लाह तबारक व तअ़ाला के साथ इस क़दर हाज़िर रहते हैं कि अल्लाह के सिवा तमाम कायनात से बे ख़बर हो जाते हैं और ये मर्तबा हाले कमाल है जो शख़्स सिमाअ़ की हालत में रक़्स व तहरीक करता और कपड़े फ़ाड़ता है अगर वो मग़लूबुल हाल है तो वो माखूज़ न होगा और जो शख़्स रिया या इज़हारे दरवेशी के लिये अपने इख़्तियार से कोई हरकत या रक़्स करेगा तो वो ज़रूर माखूज़ होगा क्योंकि ये हराम है जब दरवेश हालते सिमाअ़ में हाथ मारता है तो उसके हाथ की शहवत झड़ जाती है और जब पाँव ज़मीन पर मारता है तो जो शहवत पैर में होती वो पैर से निकल जाती है इसी तरह जब वो अल्लाह व रसूल का नअ़रा बुलन्द करता है तो अन्दर की शहवत बाहर निकल जाती है और जो शख़्स नफ़्स के ख़्यालात और शहवत की ख़्वाहिशों से दूर हो जाता है तो उसे कुर्ब हासिल होता है और इस क़िस्म के हालात का सुदूर ही कुर्ब की अ़लामत है और सिमाअ़ में इस क़िस्म की हरकते ज़हूर में आती है खुलासा कलाम ये है कि जो सिमाअ़ दिल से सुने वो जाइज़ है और जो नफ़्स से सुने वो सिमाअ़ हराम है।

अगर सिमाअ़ में अल्लाह व रसूल और नेक सालिहीन का ज़िक्र हो तो सिमाअ़ दिलों की कुदूरत (गदलापन) को निकालकर दिलों को ईमान की रोशनी से मुनव्वर करता है और इश्के इलाही और इश्के रसूल और सालिहीन की मुहब्बत और अल्लाह की माअ़रिफ़त की तरफ़ माइल करता है जो सिमाअ़ हक़ पर मबनी हो वो क़ल्ब और रुह में एक अ़जीब तासीर पैदा करता है और साज़ और आवाज़ का जामैअ़ और अच्छे अशआ़र पर मुश्तमिल सिमाअ़ दिलों को मसर्रत व तजदीद देता है बाज़ अशआ़र रब तआ़ला की याद दिलाते हैं खुशी से, ग़म से, आ़जिज़ी या नियाज़ मन्दी से और ऐसी कैफ़ियत सामईन के दिल में इज़तिराब (बेक़रारी) पैदा करती है अगर कलाम माअ़रिफ़त पर मुश्तमिल हो तो वो बाइसे ख़ैर होता है और बेहतर व

उ़म्दाह कलाम असर अन्दाज़ होता है जिससे वज्द की कैफ़ियत पैदा होती है और ये कैफ़ियत हक़ की तरफ़ वारिद होती है और सिमाअ़ बिल मज़ामीर के हराम होने की न कोई शरई दलील है और न ही कोई शरई नसे कुरआनी और न ही इसके हराम होने पर इज्माअ़ है इसलिये सिमाअ़ बिल मज़ामीर जाइज़ व मुबाह है।

वल्लाहु तआ़ाला आलम०